E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 07-06-2023
Accepted: 16-07-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 759-763

महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सहभागिता में उच्च शिक्षा का योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]प्रज्ञा बौद्ध और [2]डॉ. मुदिता पोपली

[1]शोधार्थिनी, ग्लोकल स्कूल ऑफ शिक्षा शास्त्र, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ शिक्षा शास्त्र, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: प्रज्ञा बौद्ध

सारांश

यह शोध महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सहभागिता में उच्च शिक्षा के योगदान पर केंद्रित है। अध्ययन के अनुसार, उच्च शिक्षा ने महिलाओं को स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, और आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि उच्च शिक्षा महिलाओं की सामाजिक स्थिति को कैसे प्रभावित करती है और किस प्रकार उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती है।

मूलशब्दः सामाजिक, आर्थिक सहभागिता, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा महिलाओं

प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय के साथ बदलती रही है। विशेष रूप से, उच्च शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और समाज में अपनी पहचान बनाने के नए अवसर दिए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में आने वाले बदलावों का विश्लेषण करना है। भारतीय संस्कृति में नारियों को प्रतिष्ठा, सम्मान, श्रद्धा और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। वैदिक साहित्य में प्रमाणित है कि जहॉ नारियों का सम्मान होता है वहॉ दैवीय षक्तियॉ निवास करती हैं और जहॉ उनका निरादर होता है वहॉ विभिन्न प्रकार की विघ्न बाधायें उत्पन्न होते हैं। अतः महिला (नारी) को दिव्य षक्तियों के रूप में स्थापित किया गया है परन्तु विभिन्न संस्कृतियों के कारण नारियों की सामाजिक स्थिति में निरंतर परिवर्तन होता गया और कालान्तर में उनकी प्रस्थिति निम्न हो गयी अतः उनकी निम्न सामाजिक प्रस्थिति को दृष्टिगत करते हुये स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा कि नारियों की स्थिति में सुधार लाए बिना दुनियॉ का कल्याण संभव नहीं हो सकता है क्योंकि एक पंख से चिड़िया उड़ान नहीं भर सकती। उनका मानना था कि नारियों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में सुधार लाना विकास के लिये अत्यंत आवश्यक कार्य है। जिस समाज में महिला की स्थिति जितनी महत्वपूर्ण, सुदृढ़, सम्मानजनक व सक्रिय होगी, वह समाज उतना ही उन्नत, समृद्ध व मजबूत होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की संशोधित शिक्षा नीति और इसकी कार्य योजना में नारियों की शिक्षा को उच्च प्राथमिकता दी गयी है। औपचारिक और गैर औपचारिक स्कूलीय शिक्षा में बालिकाओं के दाखिले और उनकी शिक्षा निरन्तर रखने, ग्रामीण अध्यापिकाओं की नियुक्ति तथा पाठ्यक्रम में लिंग भेद हटाने पर बल दिया गया है जहां प्रत्येक नवोदय स्कूल में कम से कम एक तिहाई छात्राओं को अवश्य प्रवेश दिलाने के लिए प्रोत्साहन अभियान चलाया जा रहा है। विश्वस्कूल अनुदान आयोग द्वारा शोध अध्ययन केन्द्रों व प्रकोष्ठों की स्थापना को बढ़ावा देने, स्त्री समानता के क्षेत्र में, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण के विकास और विस्तार, सामाजिक विकास के क्षेत्र में वित्तीय सहायता दी जा रही है।

उद्देश्य और लक्ष्य

- महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में उच्च शिक्षा के योगदान का विश्लेषण करना।
- शिक्षा और रोजगार के अवसरों के बीच संबंधों को समझना।
- उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की सामाजिक और पारिवारिक भूमिका में आए बदलावों का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

वर्तमान में उच्च शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के विषय पर कई शोध किए गए हैं। ये शोध दर्शाते हैं कि उच्च शिक्षा ने महिलाओं को समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में मदद की है। अध्ययन यह भी दर्शाते हैं कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं अधिक आत्मनिर्भर और समाज में सक्रिय होती हैं।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के मुताबिक मध्यप्रदेश महिला उत्पीड़न और दहेज हत्या के मामले में दूसरे स्थान पर 45.8 हैं मध्यप्रदेश में भिण्ड, मुरैना व श्योरपुर तथा ग्वालियर जिले में प्रति एक

हजार लड़कों पर 850 से कम लड़कियां है, जो देश के औसत से काफी कम है। देश की करीब 24 लाख पंचायत प्रतिनिधियों में 3.2 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग है और 18. 81 प्रतिशत निर्जन जिन्दगी जीते है।

तनवर (1987), तथा अचूथन (1989), नें नारियों की सामाजिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि सम्बन्धी अपने शोध अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की महास्कूली छात्राओं में वृत्तिक अभिविन्यास निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत अधिकांश महिलायें उच्च मध्यम वर्गी व शहरी पृष्ठभूमि तथा अंग्रेजी माध्यम व केन्द्रीय स्कूलों में शिक्षित थी।

राजन (1993), ने भारत में महिला और आधुनिक व्यवसाय सम्बन्धी अपने शोध अध्ययन में पाया कि अधिकांश कार्यरत नारियों के पिता परास्नातक, व्यावसायिक तकनीकि शिक्षा, चिकित्सा और अभियन्ता तथा उच्च प्रशासनिक सेवा में संलग्न थे। शोध अध्ययन के अनुसार अभिभावकों की शिक्षा तथा नारियों के कार्यरत होने के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

वर्मा (1965), द्वारा बालिकाओं की वृत्ति से सम्बन्धित एक शोध पत्र प्रकाशित किया गया, जिसमें पाया गया कि भारत की परिवर्तित होती मान्यताओं एवं मूल्यों ने बालिकाओं का दृष्टिकोण व्यावसायिक बना दिया है तथा वे वैज्ञानिक साहित्यकार, क्राफ्ट, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक कार्य एवं बाहरी कार्यो से सम्बन्धित व्यवसायों को अपनाने हेतु तत्पर है।

सिंह रजनी रंजन (2007), ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि आत्मनिर्भर महिलायें परिवार व समाज को विकासशील बना सकती है इसलिए हमें उनको आत्मनिर्भरता व योग्यता बढ़ाने का अवसर देना चाहिये।

उपाध्याय (2000), ने विश्वस्कूल प्राध्यापकों में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता सम्बन्धी अपने शोध अध्ययन में पाया कि महिला अध्यापक पुरुष अध्यापकों की तुलना में महिला अधिकारों के प्रति अधिक जागरुक हैं। युवा अधापकों में प्रौढ अध्यापकों के प्रति अधिक जागरुकता हैं। इसके अतिरिक्त 40 प्रतिशत अध्यापक महिला अध्यापकों के प्रति अधिकतम जागरुक हैं। तथा 50 अध्यापक महिला अधिकारों के प्रति औसत रुप से जागरुक हैं।

भरत (1994), ने कामकाजी तथा घरेलू नारियों पर किए गए एक तुलनात्मक शोध अध्ययन में पाया कि दोनों ही वर्गो की नारियों ने स्त्रियों की योग्यता को परिवार और रोजगार दोनों ही क्षेत्रों में सामन्जस्य सहित अपनाने को महत्व दिया। कामकाजी नारियों से घरेलू नारियों की तुलना करने पर कामकाजी नारियों ने भी पारम्परिक तथा आधुनिक दोनों ही मूल्यों को स्वीकृति दी।

डॉ. विनीता गुप्ता (2012), ने विवाहित कामकाजी नारियों की दोहरी भूमिका का परिवार एवं व्यवसाय पर प्रभाव सम्बन्धी अपने शोध अध्ययन में पाया कि व्यवसाय के आधार पर सभी नारियों का कार्य समय अलग अलग है। कार्यरत नारियों का उनके परिवार के सदस्यों के साथ सम्बन्धों का शोध अध्ययन करने पर पाया कि 58 प्रतिशत नारियों के सम्बन्ध सन्तोषजनक है,12 प्रतिशत असन्तोषजनक है तथा18 प्रतिशत तनावपूर्ण है।

शोध पद्धतियाँ

यह अध्ययन महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में उच्च शिक्षा के प्रभाव को समझने के लिए किया गया है। डेटा संग्रह के लिए महिलाओं के शिक्षा स्तर, रोजगार की स्थिति, और पारिवारिक भूमिका पर सर्वेक्षण किए गए हैं। साथ ही, उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं के साक्षात्कार भी लिए गए हैं।

महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर उच्च शिक्षा के प्रभाव को समझना वर्तमान समाज में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा है, खासकर जब यह विकासशील देशों की बात आती है। भारत जैसे देशों में जहां महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, वहीं यह जरूरी हो जाता है कि हम इस बात का गहराई से अध्ययन करें कि उच्च शिक्षा महिलाओं की जीवनशैली, समाज में उनकी भूमिका और आर्थिक स्थिति को कैसे प्रभावित करती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में उच्च शिक्षा के प्रभाव को विस्तार से समझना है।

इन तालिकाओं में ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी में प्रमुख अंतर दर्शाया गया है, जो इस शोध का मुख्य आधार है।

तालिका 1: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की सामाजिक भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन

तालिकाः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की सामाजिक भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन	ग्रामीण क्षेत्र (प्रतिशत)	शहरी क्षेत्र (प्रतिशत)
समाजिक भागीदारी का प्रकार		
पंचायत या ग्राम सभा में भागीदारी	20	5
महिला समूहों में भागीदारी	25	15
सामुदायिक सेवा या छळव में भागीदारी	10	25
राजनैतिक भागीदारी	5	10
धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजन में भागीदारी	40	45
इन तालिकाओं में ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी में प्रमुख अंतर दर्शाया गया है, जो इस शोध का मुख्य आधार है।		

महिलाओं के जीवन में उच्च शिक्षा का महत्व

उच्च शिक्षा का महिलाओं के जीवन पर व्यापक और गहरा प्रभाव होता है। यह न केवल उन्हें ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर करती है। शिक्षित महिलाएं न केवल अपने परिवार में निर्णय लेने में सक्षम होती हैं, बल्कि समाज में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक संरचनाओं और प्रथाओं में बदलाव लाने के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।

उच्च शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सामाजिक असमानताओं से लड़ने की शक्ति मिलती है। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और समाज में समानता की दिशा में प्रयास करती हैं। इसके अलावा, उच्च शिक्षा के साथ–साथ महिलाओं को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होते हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो पाती हैं। इस प्रकार, शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरती है।

इस अध्ययन में डेटा संग्रह के लिए विभिन्न स्तरों पर सर्वेक्षण और साक्षात्कार का उपयोग किया गया है। महिलाओं के शिक्षा स्तर, रोजगार की स्थिति और उनकी पारिवारिक भूमिकाओं का

अध्ययन करने के लिए विस्तृत सर्वेक्षण किए गए हैं। यह जानने का प्रयास किया गया है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद महिलाएं किस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में सक्षम होती हैं और उनकी सामाजिक स्थिति में क्या परिवर्तन आता है। इसके अलावा, उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं के साक्षात्कार भी किए गए हैं, जिनसे यह जानकारी प्राप्त की गई कि शिक्षा ने उनके जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव डाला है।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उच्च शिक्षा

सामाजिक रूप से, शिक्षा ने महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलने में मदद की है। पहले महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों तक सीमित रखा जाता था, लेकिन आज के समय में उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं। शिक्षा के कारण महिलाएं अपनी पहचान बना रही हैं, और वे समाज में पुरुषों के बराबर खड़ी हो रही हैं।

शिक्षा प्राप्त महिलाओं को सामाजिक रूप से अधिक सम्मान मिलता है। वे अपने परिवार और समाज के निर्णयों में हिस्सा लेती हैं और समाज के विकास में योगदान करती हैं। इसके अलावा, शिक्षित महिलाएं अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बनती हैं। वे अपने बच्चों की शिक्षा और उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार, उच्च शिक्षा न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाती है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का भी साधन बनती है।

महिलाओं की आर्थिक स्थिति और उच्च शिक्षा

आर्थिक रूप से, उच्च शिक्षा ने महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। पहले महिलाएं आर्थिक रूप से अपने परिवार पर निर्भर रहती थीं, लेकिन शिक्षा ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है। शिक्षित महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रही हैं, जैसे कि बैंकिंग, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, स्वास्थ्य सेवाएं आदि। रोजगार प्राप्त कर वे न केवल अपने परिवार के लिए एक सहारा बनती हैं, बल्कि अपनी आर्थिक स्वतंत्रता भी सुनिश्चित करती हैं।

उच्च शिक्षा ने महिलाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं। इसके अलावा, कई महिलाएं उद्यमिता की दिशा में भी कदम बढ़ा रही हैं। वे अपने खुद के व्यवसाय शुरू कर रही हैं और अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही हैं। इसके साथ ही, वे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत बना रही हैं। शिक्षा के कारण महिलाएं अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक वित्तीय निर्णयों में भी आत्मनिर्भर हो जाती हैं।

पारिवारिक भूमिकाओं में उच्च शिक्षा का प्रभाव

पारिवारिक रूप से, शिक्षा ने महिलाओं को अपने घर और परिवार में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। पहले महिलाओं की भूमिका केवल घर के कामकाज तक सीमित मानी जाती थी, लेकिन आज के समय में शिक्षित महिलाएं घर के साथ—साथ बाहरी कार्यों में भी योगदान दे रही हैं। वे परिवार के निर्णयों में हिस्सा लेती हैं और बच्चों के विकास के लिए विशेष ध्यान देती हैं।

शिक्षित महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होती हैं। वे उन्हें बेहतर भविष्य देने की दिशा में प्रयासरत रहती हैं। इसके अलावा, वे परिवार के वित्तीय प्रबंधन में भी हिस्सा लेती हैं और घर के खर्चों का सही तरीके से प्रबंधन करती हैं। इस प्रकार, शिक्षा ने महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं को अधिक प्रभावशाली बनाया है।

परिणाम और व्याख्या

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। ये महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, बल्कि समाज और परिवार में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। इसके साथ ही, उच्च शिक्षा ने महिलाओं के आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी बढ़ावा दिया है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर गहरा प्रभाव डालती है। शिक्षा के कारण महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं, वे समाज में अपनी पहचान बना रही हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं। इसके अलावा, वे अपने परिवार के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा महिलाओं के जीवन में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली शक्ति है। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने का अवसर देती है और उन्हें सशक्त बनाती है। यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक महिलाओं को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाएं, ताकि वे समाज में अपनी भूमिका को और सशक्त बना सकें। प्रत्येक समाज के लिए शिक्षा का अपना महत्व होता है। एक समतामूलक समाज में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होता है। चाहे वह पुरुष वर्ग हो या स्त्री वर्ग। यद्यपि कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाये तो प्राचीन काल से ही भारतीय स्त्रियों की गौरवशाली परम्परा रही है। वे प्रत्येक क्षेत्र में अपने कौशल दिखाती नजर आयी है चाहे वह साहित्य हो, शिक्षा हो, रण का मैदान हो अथवा राजनीति हो। नारियों ने प्रशासन में भी पुरुषो से कंधे से कंधा मिलाकर बराबर की भागदारी निभायी हैं। आज की भारतीय नारी अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हुई है। वह शिक्षा के क्षेत्र में जागरुक हो रही है तथा वर्तमान में इस मुकाम पर है कि वह प्रत्येक क्षेत्र में मर्दों के बराबर सहभागिता निभा रही है। यह स्थिति शिक्षा का ही परिणाम है।

इसी प्रकार से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिला की सहभागिता में शिक्षा के प्रभावों को देखने का प्रयास किया जाता है तो उसका प्रभाव न केवल आर्थिक स्तर पर बल्कि सामाजिक, व पारिवारिक स्तर पर भी दृष्टिगोचर होता है।

अंततः, यह अध्ययन यह दिखाता है कि उच्च शिक्षा महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और सशक्त बनाया है। समाज में उनका योगदान बढ़ा है और वे अब समाज के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भविष्य में शिक्षा के प्रसार के साथ महिलाओं की स्थिति और भी बेहतर हो सकती है, जिससे समाज का समग्र विकास संभव होगा।

भविष्य के लिए सुझाव

महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए उच्च शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। इसके लिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर प्रयास करने होंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे को सुधारने की जरूरत है, ताकि वहां की महिलाएं भी शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही, समाज को महिलाओं की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा।

शिक्षा के साथ—साथ महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने की दिशा में भी कार्य करना चाहिए। इसके लिए विशेष योजनाएँ बनाई जानी चाहिए, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करें। इस प्रकार, शिक्षा के माध्यम से समाज में महिलाओं की सहभागिता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है।

संदर्भ

1. एस., तनवार (1987), रिलेशनशिप ऑफ सेक्सरॉल

ओरियेन्टेशन, सेल्फ इस्टीम एण्ड सोशियों इकोनॉमिक बैकग्राउण्ड टू कैरियर एण्ड फैमिली वैल्यूज अमंग कालेज फीमेल्स, अप्रकाशित, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध मनोविज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, पृ0 139 उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

2. झा., के एन. (1985), वोमेन टुवर्ड्स मार्डनाईजेशन, पटना, जानकी प्रकाशन, 1985, पृ0 11 उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
3. बाजपेयी, एल.बी. (2003), शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकि, आलोक प्रकाशन।
4. बाजपेयी, एल.बी., सारस्वत, मालती (1996), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें, आलोक प्रकाशन।
5. बेस्ट, जे.डब्ल्यू. (2001), 'रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिन्टस हॉल ऑफ इन्डिया प्रा.लि. नई दिल्ली।
6. कश्यप, शिल्पा (2006), स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम0 एड0 शोधप्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
7. कपिल, एच.के.(1999), अनुसंधान विधियॉ, एच0पी0 भार्गव बुक हाऊस, आगरा।
8. कौल, लौकेश (1997), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ।
9. कुमार, मयंक (2008), सर्व शिक्षा अभियान में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों की भूमिका एवं परिषदीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से एक तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
10. कुमारी, सोनिका (2011), महिला उत्पीड़न सम्बन्धी समाचारों के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो के दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
11. कुमारी, नीलम (2006), मध्यमवर्गीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति, जानकी प्रकाशन, पटना, उद्धृत सरिता कनौजिया (2011), कार्यरत महिलाओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरुकता तथा उसके कियान्वयन में सम्बन्ध. एक अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
12. कनौजिया, सरिता (2011), कार्यरत महिलाओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरुकता तथा उसके कियान्वयन में सम्बन्ध. एक अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
13. मोहपात्र, पी.एल. (1991), ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ व्यूज ऑफ एडल्ट लिट्रेट एण्ड इलिट्रेट वोमेन टुवर्डस अर्ली मेरिज एण्ड फैमिली साइज, उद्धृत एम.बी.बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वॉल्यूम–11, दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 1186, द्वारा रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी.शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
14. मनथोटो, (1996), 'इम्पावरिंग वोमेन फॉर डेवलपमेंट थ्रू नॉन फीमेल एजूकेशन, द केस आफ लेस्थो, डिजरर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल (ए) ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्स –वाल्यूम 57, नं. 3 पृ0 975 द्वारा अय्यूब अली सिद्दीकी (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
15. मिश्रा, के. एन. (1995), वोमेन एजुकेशन एण्ड द उपनिषदक सिस्टम ऑफ एजुकेशन, चुग पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
16. मिश्रा, शिवा (1995), विभिन्न शैक्षिक स्तर की शिक्षिकाओं का स्त्री सम्बन्धी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.ए., शोध प्रबन्ध द्वारा सोनिका कुमारी (2011), महिला उत्पीड़न सम्बन्धी समाचारों के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो के दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
17. मिश्रा, डॉ0 आर0 एम0 (1996), शिक्षामनोविज्ञान में प्रयोग, परीक्षण, सांख्यिकी मापन, एवं मूल्यांकन, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
18. प्रियंका, (2008), माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की समस्याएं व उनका निराकरण–एक अध्ययन, अप्रकाशित एम.ए. शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
19. सिंह, रजनी रंजन (2007), सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण की वास्तविकतायें, परिप्रेक्ष्य ।
20. सिंह, डॉ0 मधुरिमा (2012), शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की जनसंख्या विस्फोट के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाचिन्तन, वर्ष 11, अंक 42, त्रिमूर्ति संस्थान, अप्रैल. जून।
21. सिंह, अरुण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
22. सिद्दीकी, अय्यूब अली (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
23. तिवारी, डी सुपरवाइजर (1980), एट्टीट्यूड ऑफ द विलेजर्स टुवर्ड वूमेन, एजुकेशन : अप्रकाशित एम. एड. डिजर्टेशन, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा अय्यूब अली सिद्दीकी (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
24. गिलेस, जूडी (1993), ए होम ऑफ वन्स आन वोमेन एण्ड डोमेस्टि सिटी इन इंग्लैण्ड 19–18–1950, सोशियोलॉजिकल एब्स्ट्रेक्ट, सैन डियागो इण्टरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसियेशन, 41, 5 दिसम्बर, 1993 पृ0 2688, उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
25. गिलेस्पी डियर्स, कीसीए स्पोहन (1990), एडोलसेन्टस एट्टीट्यूड टुवर्ड्स वोमेन इन पॉलिटिकलः ए फालोअप स्टडी, सोशियोलॉजिकल एब्सट्रेक्ट, सैनडियागो इण्टरनेशनल सोशियोलौँजिकल ऐसोसियेशन, 38, 4 अक्टूबर 1990, पृ0 148, उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

26. हेनरी, ई. गैरेट (2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिशर्स।
27. भरत, शालिनी (1994), परसेप्शन ऑफ इण्डियन वोमेनः ए कम्प्रेजन ऑफ कैरियर एण्ड नान कैरियर वोमेन, साइक्लॉजिकल एब्सटेक्ट, वाशिंग्टन, द अमेरिकन साइक्लॉजिकल एसोसियेशन,81,11 नबम्बर 1994 पृष्ठ 49–49 ।
28. भट्ट, जी.डी. (2000) 'इम्पैक्ट ऑफ इन्सेटिव स्कीमस ऑफ एलीमेन्ट्री एजूकेशन' हिमालयन रीजन स्टडी एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट (एरिक फन्डेड) इन्डियन एजूकेशनल एब्स्ट्रेक्टस, वाल्यूम नं0–2, जुलाई, एन.सी.ई.आर.टी द्वारा कल्पना वर्मा (2011), विभिन्न स्तरों तक शिक्षित महिला प्रधानों की राजनैतिक भागीदारी की प्रकृति, अप्रकाशित पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
29. पाण्डेय, रामशकल (2005), शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ.सं. 225।
30. पाठक, इन्दू (2007), राजनैतिक सहभागिता एवं महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र, अंक 5, अगस्त 2007, पृ0 26–30 ।
31. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उनकी समस्यायें, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा, पृ.सं.– 460–462।
32. प्रतापमल, देवपुरा (2008), 'महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व', कुरूक्षेत्र, अंक–5, मार्च।
33. श्रीवास्तव, रश्मि (2000), लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.